**International Journal of Hindi Research**
**ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.hindijournal.com**
**Volume 2; Issue 6; November 2016; Page No. 17-19**

# डोगरी व राजस्थानी व्रत संबंधी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन

**पुरूषोतम सिंह**

सरकारी अध्यापक, जिला–उधमपुर स्कूल शिक्षा विभाग जम्मू व कश्मीर सरकार, भारत।

**सारांश**

लोक–गायक प्रकृति के अभिराम क्रोड़ में पोषिक होता है। उसका अपनी चिर–प्रकृति से अलग अस्तित्व ही नहीं है। वृक्ष, पौधे एवम् पुष्प आदि वनस्पतियों के सौन्दर्य उस के भावुक मन को आकर्षित करते हैं। व्रत तथा उपवास का अटूट संबंध है। कर्म सामान्य के अर्थ में व्रत शब्द का प्रयोग बहुत ही प्राचीन है। प्रकृति का लोकगीतों में, जिस रूप में चित्रण होता है, उसको विवेचन की सुविधा के लिए निम्न भागों में विभक्त करके वर्णन किया जा रहा है और डोगरी एवम् राजस्थानी लोकगीतों में इस प्रकृति–चित्रण की समानताओं पर प्रकाश डाला जा रहा है।

**मूल शब्द:** डोगरी एवम् राजस्थानी लोकगीत, एकादशी व्रत, करवा चौथ एवम तुलसी का व्रत

## 1. प्रस्तावना

व्रत का प्रधान उद्देश्य आत्मशुद्धि तथा परमात्मा चिन्तन है तथा आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग में एक उपादेय संबल है जो निष्ठा व श्रद्धा के साथ व्रती को सत्य की उपलब्धि करा देता है। व्रत तथा उपवास का अटूट संबंध है। कर्म सामान्य के अर्थ में व्रत शब्द का प्रयोग बहुत ही प्राचीन है। विविध व्रतों में नित्य व्रत हमारे लिए बहुत आवश्यक होता है जैसे एकादशी व्रत, शिवरात्रि का व्रत आदि। नैमितिक व्रत किसी निमित को लेकर जैसे चांद्रायण व्रत तथा काम्य व्रत कामना विशेष की सिद्धि के लिए होते हैं।

बालिकाएं एवं स्त्रियां विविध वारों एवं तिथियों को व्रत–उपवास करती हैं, जिनका लौकिक महत्व यह है कि उनको मनोनुकूल वर मिले, उनका सुहाग बना रहे और परिवार में सुख–समृद्धि बनी रहे। परलौकिक महत्व यह है कि धर्म–कर्म करने से उनका परलोक या आगामी जीवन सफल होगा। इन्हीं लौकिक एंव परलौकिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए व्रत एवं उपवास किए जाते हैं।

## 2. एकादशी व्रत

हिन्दुओं में सबसे अधिक प्रचलित व्रत 'एकादशी व्रत' माना जाता है। प्रत्येक एकादशी को यह व्रत किया जाता है। ज्येष्ठ की एकादशी का विशेष महत्व है। डोगरी में इसे 'निर्जला–एकादशी' व्रत कहते हैं। डोगरी लोकगीतों में इस व्रत की चर्चा की गई है–

दिक्खी कनक मनै बिच लोभै, पाप छाया दिल आई।
न्हाई आवेआं जित्तों ब्रह्मणा,लाचै कनका पाई।
भूख कासती दा व्रत रखेआ तूँ आवेआं वर्त पुजारी।
न्हौने दै पज भेजेआ बाए पिछों दा लाइयै पाई।[1]

इस प्रकार हम देखते हैं कि एकादशी व्रत का प्रचलन डुग्गर में रहा है। एकादशी व्रत पर राजस्थान में स्त्रियां निम्न लोकगीत गाती है–

वरत बड़ो एकादशी
अथवा
करो भाई एकादशी
राम नाम बिन नहीं निस्तारा।[2]

## 3. करवा चौथ

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी के दिन इस व्रत का आयोजन होता है। यह व्रत सुहागिन नारियों का है। व्रत से पूर्व रात्रि के अन्तिम पहर में नारियाँ 'सरगी' खाती हैं। सरगी में फेनियें, मिठाईयां, फल और पकवान होते हैं। प्रातः उठ कर नारियां नहा–धो कर पवित्र वस्त्र धारण करती हैं। इस पूरे दिन वे निराहार रहती हैं। उनके लिए खेतों में काम करने जाना, चर्खा कातना अथवा सूई–धागे का काम करना वर्जित होता है। सायं काल के समय वे श्रृंगार करके 'वेआ' का दान करती हैं। वेआ में रुपये, फल, मिठाईयां, वस्त्र आदि होते हैं। वेआ डुग्गर समाज में बहुएँ अपनी सास को ही देती हैं और उन से अटल सुहाग बने रहने का आर्शीवाद प्राप्त करती हैं। सास न होने पर वेआ जेठानी, ससुर या किसी भी बुजुर्ग को दिया जा सकता है। चन्द्रमा उदय होने के बाद सुहागिन अन्न ग्रहण करती हैं। शाम के समय स्त्रीयाँ एकत्रित होकर वृताकार में बैठ कर तथा हाथों में वेआ की थाली लेकर यह लोकगीत गाती हैं।

लै बीरो कुड़िये कौलड़ा।
लै सर्व–सुहागनी कौलड़ा।।
लै कत्तीं ना, टेरी ना।
घूं झरक्खड़ा फेरीं ना।।
बाह्न पैर पाईं ना।
सुत्तड़ा जगाईं ना।
रुट्ठड़ा मनाईं ना।।
भैन प्यारी बीरां।
चन्न चढ़े ते पानी पीना।।
ऊए ड़ीकी जानिये।
जमिंदा कुच्छड़ पानियें।।
लै कौलड़ा बटाइये।
जमिंदा झोली पाइये।[3]

डुग्गर की तरह राजस्थान में भी करवाचौथ का व्रत रखा जाता है। अन्तर केवल इतना है कि डुग्गर की तरह यहां लोकगीत ना गाकर, करवाचौथ की कहानी सुनी–सुनाई जाती है।

## 4. तुलसी का व्रत

डुग्गर में तुलसी की बहुत मान्यता है। लगभग हर हिन्दु परिवार के घर के आँगन में तुलसी का पौधा होता है। तुलसी के पौधे को लाल रंग की चुन्नी से लपेटा होता है तथा उसके आस–पास की जगह को विभिन्न रंगों से सजाया जाता है।

महीने की पहली तिथि से तुलसी पूजा शुरू होती है। इस अवसर पर सभी स्त्रीयां सुबह नहा–धो कर इस पौधे को जल देती हैं। यह क्रिया पूरे महीने भर चलती है। तुलसी के आस पास रंगीन रंगों से ऊँ, स्वास्तिक व मोर, तोते आदि बनाए जाते हैं।
एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक कन्याऐं व स्त्रीयां विधिवत् तुलसी की पूजा करती हैं। तुलसी की डालियों को नारियल की गरी से सजाया जाता है। ठीक उसी प्रकार जैसे डुग्गर में वधु के हाथों में नारियल का गरी बाँधी जाती हैं।
तुलसी की परिक्रमा के समय स्त्रीयां स्त्रियां लोकगीत भी गाती हैं–

ए मेरी तुलसी मां रानिये,
ओम नमो–नमो।
ए बह्मां जी दी जाइये,
ओम नमो–नमो।
तुलसिये। महारानिये,
ओम नमो–नमो।[4]

पूजा समाग्री में फल सब्जी आदि जो कुछ उपलब्ध हो तुलसी को सप्रेम चढ़ाया जाता है। पूजा के उपरान्त फलाहार किया जाता है। कई लोग तुलसी का विवाह भी करवाते हैं और इस विवाह में प्रयुक्त समस्त सामग्री किसी पंडित को दे दी जाती है। इस विवाह अवसर पर कन्याऐं जो लोकगीत गाती हैं वह इस प्रकार है–

मैह्ले दै अन्दर तुलसी बराजै,
मरूऐ लर्जा छंडियां ओ।
मेरे हरि बिना।[5]

तुलसी विवाह पर कन्या के विवाह पर गाए जाने वाले लोकगीत (सुहाग) भी गाए जाते हैं। जो तुलसी पाँच वर्ष तक नहीं सूखती तो समझा जाता है कि वह विवाह योग्य हो गई है। अगर पाँच वर्षों से पहले सूख जाती है तो उसका विवाह नहीं करवाया जाता है।
तुलसी व्रत के दिन स्त्रीयां तुलसी को खूब सजाती हैं तथा कड़वे (सरसों के) तेल से दीपक जलाती हैं। इस दिन फलों का सेवन स्त्रीयों द्वारा किया जाता है।
व्रत के दूसरे दिन खिचड़ी बनाकर, उस पर मूली रखकर तुलसी को भोग लगाया जाता है। उसके पश्चात् वह खिचड़ी किसी पंडित अथवा कन्या को दे दी जाती है।
कुछ लोग यह विवाह बड़ी श्रद्धा से मनाते हैं। वह ठाकुर को सजा धजा कर बारात निकालते हैं, तथा बाजे की व्यवस्था भी करते हैं। बारात आगमन पर बारातियों को फलाहार कराया जाता है। तुलसी को दुल्हन की तरह सजाया जाता है तथा पंडित ठाकुर व तुलसी का विवाह पढ़ता है। ठाकुर–तुलसी सात फेरे भी लेते हैं। अन्त में तुलसी को यथाशक्ति दान–दहेज देकर विदा किया जाता है।
राजस्थान में तुलसी पूजन का त्यौहार समान रूप से मनाया जाता है। एक राजस्थानी लोकगीत के अनुसार तुलसी सात सखियों के साथ यमुना नदी पर पानी भरने गई। उस समय सखियों ने व्यंग किया कि तुलसी तो अभी भी कुंवारी है। इसी बात पर तुलसी के पिता ने तुलसी के विवाह की तैयारी की और कृष्ण के साथ उसका विवाह निश्चित किया, यथा–

सात साहेली पाणीडे ने नीकळी,
सतूं अेक उणिहारे हो राम,
भारत गई जल जमना को पाणी।
सातूं साहेलीयां उठ बोली,
तुलछां ओड कुंवारां, हो रामा भरण० [6]

तुलसी का यह त्यौहार प्रमुख रूप से स्त्रियों का त्यौहार है। इस अवसर पर तुलसी–विवाह के विभिन्न लोकगीतों के साथ विवाह के अन्य लोकगीत भी गाए जाते हैं।

**5. वत्स द्वादशी**

वच्छदुआह का व्रत कृष्ण जन्माष्टमी के बाद एकादशी को आता है। यह व्रत घर गृहस्थी की मंगल कामना तथा पशुधन में बढ़ोतरी की इच्छा से किया जाता है। प्रो० शक्ति शर्मा के अनुसार 'व्रत से दो दिन पूर्व पंडित से मुहुर्त निकलवा कर, नहा धो कर निराहार रह कर घर की नारियां काले छोले, माश, गीटियें (छोटे पत्थर) तथा दुर्वों को पानी में भिगो देती हैं। एक दिन पूर्व ड्रेंक (नीम की तरह का वृक्ष ) के पत्तों पर भीगी वस्तुओं को उड़ेल देती हैं। व्रत के दिन पूर्वः काल स्नान करने के बाद घर के एक विशेष कमरे में गोबर का लेपन करती हैं। तदुपरान्त आटा गूंथ कर मोटे–मोटे रोट पकाती हैं। ये रोट संख्या में उतने ही होते हैं जितने घर में पुरुष होते हैं। रोट बनाने के बाद बचे हुए गूंथे आटे में हल्दी मिला कर इस से कट्टू–वच्छु (भैंस तथा गाय का बछड़े), तम्बाकू पीता किसान, चाटियें (मटके), मेधानियां तथा गोलियाँ बनाती हैं। बाहों में बांधने के लिए पीले रंग का धागा, दुर्व भिगोया हुआ अनाज तथा फल एक थाली में सजा कर, सुन्दर तथा आकर्षक वस्त्र और आभूषण पहन कर किसी जल कुंड, नदी अथवा सरोवर के तट पर जा कर 'वच्छ दुआह' का पूजन इन शब्दों मे करती है–

कट्टू आए बच्छु,
बच्छु दो आई तेरड़ो,
सोलहां द्रब्बां, सोलहें गंडें धागा बद्धा,
खसम, पुतर, नबाब लब्बा,
रानी पूजै राजेगी–औं पूजां सोहागे गी,
रानी ने राजा ते में सोहाय प्यारड़ा.....
कट्टू आए..... बच्छू आए।[7]

पूजा करने के बाद रोट लड़कियों, बच्चों और पुरोहित में बांट दिया जाता है। बाद में डुग्गर की नारियाँ 'द्रोपड़ा' दान करने के बाद फलाहार करती हैं। कई घरों में नारियां 'बच्छ दुआह' पूजन करते समय घर से बाजे–गाजे से निकलती हैं।
राजस्थान में इस तरह का कोई व्रत उपलब्ध नहीं हो पाया है।

**6. द्रुवड़ी**

प्रो० शक्ति शर्मा के अनुसार राधा अष्ठमी तथा महा लक्ष्मी व्रतों को ही डुग्गर में द्रुब्बड़ी नाम से अभिहित किया जाता है। महा लक्ष्मी का व्रत अष्ठमी से आरम्भ हो कर असूज मास की कृष्ण पक्ष की अष्ठमी तक सोलह दिन तक चलता है। डुग्गर की नारियां पीले धागे को सोलह गांठें बांध कर सोलह दिन तक उस की पूजा दुर्व से करती हैं। सौलहवें दिन रोट पका कर नवैध बाँट कर वे इस व्रत का समापन करती हैं–

द्रुबड़ी–द्रबड़े दा ब्याऽ होआ, हे– ऊ।
रुट्टै आली दै जागत होआ, है– ऊ।
इक्क, दो, त्रै, चार, पन्ज, छे, सत्त।
हे.ऊ, बाह्र खिले मा जाए।[8]

राजस्थान में दूबड़ी सात का व्रत रखा जाता है। डुग्गर की तरह यहां लोकगीत ना गाकर, केवल कहानी सुनी जाती है। व्रत के अनुसार इस दिन स्त्रीयां ठंडी रोटी खाती हैं। इस कहानी में एक साहुकार के सात पुत्र होते हैं। विवाह के बाद पुत्र की मृत्यु हो जाती थी। कुम्हार के द्वारा कही बातों को ध्यान में रखकर लड़के की बुआ शादी में वही काम करती है। बुआ द्वारा किया जाने वाला प्रत्येक कार्य उलटा था। इन उलटे कार्यों के कारण ही विवाह सफल हो पाया और साहूकार को अपने पहले पुत्र भी प्राप्त हो गए।

## 7. संदर्भ सूची

1. डोगरी लोकगीत भाग–2, पृ० 64.
2. राजस्थानी लोकगीत–डा० स्वर्णलता अग्रवाल, पृ० 153.
3. डोगरी लोकगीत भाग–17, पृ० 25.
4. डोगरी लोकगीत भाग–13, पृ० xviii.
5. डोगरी लोकगीत भाग–13, पृ० xviii.
6. राजस्थान के लोकगीत, सं० त्रय, पृ० 11.
7. डुग्गर की संस्कृति–शिव निर्मोही, पृ० 87.
8. डोगरी लोकगीत भाग–13, पृ० 3.